संजीव®

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

अध्यापक ग्रेड III

सीधी भर्ती प्रतियोगी परीक्षा 2022-23

L - 1 अंक भार / 180 अंक एवं **L - 2** अंक भार / 130 अंक के लिए

राजस्थान सामान्य ज्ञान एवं शैक्षिक परिदृश्य

भाग-1 ☞ राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान, राजस्थानी भाषा

भाग-2 ☞ राजस्थान का सामान्य ज्ञान, शैक्षिक परिदृश्य, निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम

मार्गदर्शक एवं लेखक

मनोहर सिंह कोटड़ा • दीपा रत्नू

संजीव प्रकाशन, जयपुर

- **प्रकाशक :**
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट,
  चौड़ा रास्ता, जयपुर-03
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

विशेष आभार

डॉ. जयंतिलाल खंडेलवाल
एस.आर. ऑंजणा
जी.सी. जाखड़
डा. दीपेश कुमार सैनी
डॉ. ओ.पी. पटेल
कैलाश जोशी सिरोही
प्रो. आर.डी. गुर्जर
रघुनंदन बालोत
डॉ. मनोहर सिंह फैदाणी
सत्यनारायण मांड्या
पवन टाक
पवन जलधारी
बी.एस. गुरु
गोरधन सिंह राठौड़
ललित ठाकुर
विक्रम सिंह रोहड़िया
सर प्रताप आढ़ा
अर्जुन देवासी
पवन चाँदराना
गिरिराज सिंह गंगावा
वणाराम चौधरी
लक्षिता कँवर
दिग्विजय सिंह

- © दीपा रत्नू

- **संस्करण : 2022-23**

- **मूल्य : ₹ 800.00**

- *लेजर टाइपसैटिंग :*
  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department),
  जयपुर

- *मुद्रक :*
  मनीष ऑफसैट, जयपुर

—समर्पण—

भक्तकवि
ठाकुर नैनदान वणसूर
(1926-1997 ई.)

भक्तकवि ठा. नैनदान वणसूर का जन्म 1926 ई. में तत्कालीन मारवाड़ रियासत के जालौर परगने के कोटड़ा ठिकाणे (तहसील—आहोर) में हुआ। यह गाँव उनके पूर्वज मोतीसरी ठिकाणे के ठा. लक्ष्मीदान वणसूर को मारवाड़ के महाराजा गजसिंह (1619-1638 ई.) के शासनकाल में दक्षिण अभियान के तहत अहमदनगर की लड़ाई में सेना के अग्रिम दस्ते (हरावळ) में अद्भुत शौर्य एवं वीरता प्रदर्शित करने के उपरान्त जागीर में मिला।

आप भारतीय इतिहास, धर्मशास्त्रों (विशेषकर रामचरित मानस), राजस्थानी भाषा-साहित्य एवं लोक साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान थे। 20वीं सदी के राजस्थानी डिंगल कवियों में आपका विशिष्ट स्थान है। आपकी भक्तिपरक रचनाओं के प्रमुख विषय लोक देवियाँ, लोकसंत, सनातन धर्म एवं नाथ सम्प्रदाय रहे हैं। जालौर स्थित सिरे मंदिर के पूज्य शांतिनाथजी महाराज (1939-2012 ई.) के प्रति आपकी विशेष आस्था रही है। पूज्य महाराजजी भी आपका बहुत आदर एवं सम्मान करते थे। आपकी प्रमुख रचनाएँ करणाइष्टक, नाथ-स्तुति, जगन रो गीत, राजाराम वंदन इत्यादि हैं।

- इस पुस्तक में प्रामाणिक स्रोतों से विषय सामग्री का संकलन किया गया है, साथ ही इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–
  email:sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके–इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से लेखक एवं प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं। ध्यान रखें कि आप उक्त शर्तें मानते हुए ही यह पुस्तक खरीद रहे हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्याय क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

प्राक्कथन

प्रिय प्रतियोगी परीक्षार्थियों,

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित की जाने वाली '**राजस्थान प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्यापक (ग्रेड III) सीधी भर्ती प्रतियोगी परीक्षा 2022-23**' में **लेवल-I** (180 अंक) एवं **लेवल-II** (130 अंक) के लिए '**राजस्थान सामान्य ज्ञान एवं शैक्षिक परिदृश्य**' के अन्तर्गत **भाग-1 : राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान, राजस्थानी भाषा तथा भाग-2 : राजस्थान का सामान्य ज्ञान, राजस्थान का शैक्षिक परिदृश्य, निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम** के तहत निर्धारित **नवीन पाठ्यक्रम** के अनुसार इस **मार्गदर्शिका** को तैयार किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में **बिंदुवार विषय सामग्री** एवं **खण्डवार महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तरों** का समावेश किया गया है। इस हेतु विषयवस्तु का संकलन **राजस्थान सरकार के विभिन्न विभागों के वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2021-22, राजस्थान की आर्थिक समीक्षा 2021-22, राजस्थान के बजट 2022-23, राजस्थान के विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रचलित मानक पुस्तकों, भारत सरकार द्वारा जारी विविध प्रतिवेदनों, विभिन्न विभागों की आधिकारिक वेबसाइट** इत्यादि से प्राप्त करके **सरल, सुगम एवं सारगर्भित भाषा** में लिखकर तैयार किया गया है।

इस पुस्तक को **नवीन पाठ्यक्रमानुसार** तैयार करने के लिए राजस्थान के ख्यातनाम लेखक **मनोहर सिंह कोटड़ा** एवं संजीव प्रकाशन, जयपुर के प्रबंध निदेशक **डॉ. दीपेश कुमार सैनी** एवं उनकी पूरी टीम के हम विशेष रूप से आभारी हैं।

सुधी पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

भावी अध्यापकों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित!

— संकलनकर्ता एवं संपादन टीम

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक

Part I : राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान, राजस्थानी भाषा

A. राजस्थान का भौगोलिक ज्ञान (राजस्थान का भूगोल)

1.	राजस्थान का सामान्य परिचय एवं भौगोलिक स्वरूप	**7 - 32**
2.	राजस्थान का मानसून तंत्र एवं जलवायु	**33 - 37**
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र- झीलें, नदियाँ, बांध, एनीकट, जल संरक्षण विधियाँ एवं तकनीकियाँ	**38 - 55**
4.	राजस्थान की वन-संपदा	**56 - 62**
5.	राजस्थान में वन्य जीव-जन्तु, वन्य जीव संरक्षण एवं अभयारण्य	**63 - 69**
6.	राजस्थान की मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	**70 - 72**
7.	राजस्थान की प्रमुख फसलें	**73 - 87**
8.	राजस्थान की जनसंख्या, जनसंख्या-घनत्व, साक्षरता और लिंगानुपात	**88 - 99**
9.	राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातीय क्षेत्र	**100 - 117**
10.	राजस्थान में धात्विक एवं अधात्विक खनिज	**118 - 126**
11.	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर-परम्परागत	**127 - 133**
12.	राजस्थान के पर्यटन स्थल	**134 - 159**
13.	राजस्थान में यातायात के साधन	**160 - 182**
★	महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	**182 - 205**

B. राजस्थान का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान (राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति)

1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ इत्यादि	**206 - 218**
2.	राजस्थान की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश, उनकी प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था इत्यादि	**219 - 264**

3.	राजस्थान की स्थापत्य कला : किले, स्मारक, बावड़ी एवं हवेलियाँ इत्यादि	**265 - 304**
4.	राजस्थान के मेले, त्योहार, लोक कला, लोक संगीत, लोक नाट्य एवं लोक नृत्य	**305 - 330**
5.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत	**331 - 339**
6.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन, प्रमुख संत एवं लोक देवता	**340 - 362**
7.	राजस्थान के महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल	**363 - 380**
8.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	**381 - 398**
9.	राजस्थान के वस्त्र एवं आभूषण	**399 - 401**
10.	राजस्थान की चित्रकलाएँ एवं हस्तशिल्प	**402 - 421**
11.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान, राजस्थान के जनजाति एवं किसान आंदोलन	**422 - 429**
12.	प्रजामण्डल आंदोलन एवं राजस्थान का एकीकरण	**430 - 440**
★	महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	**440 - 472**

C. राजस्थानी भाषा

1.	राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ	**473 - 478**
2.	प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ, प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार, राजस्थानी संत साहित्य एवं लोक साहित्य	**479 - 491**
★	महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	**492 - 494**

Part II : राजस्थान का सामान्य ज्ञान, शैक्षिक परिदृश्य, निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम

A. राजस्थान का सामान्य ज्ञान

1.	राजस्थान के प्रतीक चिह्न	**495 - 496**
2.	राजस्थान में राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाएँ	**497 - 500**

3. राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र	**501 - 505**
4. राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थल	**506 - 510**
5. राजस्थान के प्रमुख खिलाड़ी	**511 - 516**
★ राजस्थान के प्रसिद्ध नगर एवं स्थल इत्यादि : इसी पुस्तक का अध्याय नं. I-B-7 देखें	
6. राजस्थान के प्रमुख उद्योग	**517 - 542**
7. राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था	**543 - 582**
8. राजस्थान में जन कल्याणकारी योजनाएँ	**583 - 603**
★ महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	**604 - 616**

B. राजस्थान का शैक्षिक परिदृश्य

1. राजस्थान में शिक्षण अधिगम के नवाचार	**617 - 625**
2. राज्य में केन्द्र एवं राजस्थान सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएँ एवं पुरस्कार	**626 - 638**
3. विद्यालय प्रबंधन एवं प्रबंधन समितियाँ	**639 - 643**
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 : राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में	**644 - 653**
★ महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	**654 - 659**

C. नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम

1. नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 : प्रावधान एवं क्रियान्विति, राजस्थान नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011, राजस्थान के मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों में नि:शुल्क प्रवेश	**660 - 666**
2. राजस्थान का नवीनतम शैक्षिक परिदृश्य, राजस्थान की आर्थिक समीक्षा 2021-22 में शिक्षा, राजस्थान के बजट 2022-23 में शिक्षा	**667 - 678**
★ महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर	**679 - 680**

Part - I भाग - 'A'
राजस्थान का भौगोलिक ज्ञान (राजस्थान का भूगोल)

1 राजस्थान का सामान्य परिचय एवं भौगोलिक स्वरूप

राजस्थान का सामान्य परिचय

- वाल्मीकि कृत रामायण में हमारे प्रदेश राजस्थान के लिए **'मरुकान्तर'** शब्द का प्रयोग हुआ है। इससे पूर्व वैदिक काल में यह प्रदेश **'मरुधन्व'** एवं **'मरुदेश'** नामों से जाना जाता था। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में यह क्षेत्र **'राजपूताना'** के नाम से जाना गया।
- राजस्थान शब्द का प्राचीनतम ज्ञात **स्त्रोत बसंतगढ़ (सिरोही) का शिलालेख** है, जिसमें **'राजस्थानीयादित्य'** शब्द उत्कीर्ण है।
- **'मुहणोत नैणसी की ख्यात'** एवं **'राजरूपक'** नामक ग्रंथों में भी **'राजस्थान'** शब्द का उल्लेख हुआ है।
- राजस्थान के **सैक्त भू-भाग** (जिसके अन्तर्गत मारवाड़ तथा थार रेगिस्तान का भू-क्षेत्र जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर आदि जिले सम्मिलित थे) के लिए **मरु** या **मरुदेश** का उल्लेख हमें **ऋग्वेद, महाभारत, वृहत्संहिता** आदि प्राचीन ग्रन्थों तथा 'रुद्रदामन के जूनागढ़ (गुजरात) अभिलेख' तथा पाल वंश के अभिलेखों में मिलता है। (**स्त्रोत**—राजस्थान थ्रू द एजेज : दशरथ शर्मा)
- महाभारत में प्रयुक्त **'कुरु-जाँगला'** एवं **'मरु-जाँगला'** के उल्लेख से प्रतीत होता है कि **(जांगल)** जाँगलू के अन्तर्गत केवल राजस्थान का उत्तरार्द्ध भाग ही नहीं बल्कि पंजाब एवं हरियाणा का दक्षिण-पूर्वी भाग भी सम्मिलित था।
- **जांगल क्षेत्र** (हर्ष, नागौर व सांभर) के अधीश्वर होने के कारण शाकम्भरी और अजमेर के चौहान नरेशों को प्राय: **'जांगलेश'** भी कहा जाता था तथा इसी जांगल क्षेत्र के अधिपति होने के कारण ही आगे चलकर बीकानेर के राजा **'जांगलधर पातिसाह'** कहलाये।
- राजस्थान का पूर्वी भाग (वर्तमान जयपुर, दौसा, अलवर तथा भरतपुर का कुछ भाग) महाजनपद काल में **मत्स्य प्रदेश** कहलाता था।
- महाभारत में **मत्स्य राज्य** की राजधानी बैराठ (वर्तमान में जयपुर जिले का विराटनगर) तथा मत्स्य राज्य का पाण्डवों का प्रबल पक्षधर के रूप में उल्लेख मिलता है।
- मत्स्यवासियों से ही अभिन्नत: सम्बद्ध साल्ववासी थे। प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता **कनिंघम** का मत है कि साल्व जनपद की राजधानी **'साल्वपुर'** ही वर्तमान में **अलवर** है।
- **शूरसेन जनपद** के अन्तर्गत मथुरा सहित अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली का सीमावर्ती क्षेत्र सम्मिलित था।
- **'शिवि'** जनपद चित्तौड़ का समीपवर्ती क्षेत्र था। वर्तमान में चित्तौड़ से लगभग 7 मील उत्तर-पूर्व में स्थित **नगरी** (माध्यमिका) नामक प्राचीन गाँव में से उपलब्ध मुद्राओं पर उत्कीर्ण **'मज्झिममिकया शिवि जनपदस्स'** से इसकी पुष्टि होती है।
- **टोंक** के पास रैढ़ की खुदाई से मिले सिक्कों पर उत्कीर्ण **'मालव जनपदस्स'** से यह असंदिग्ध रूप से सिद्ध है कि **'मालव-जनपद'** भी राजस्थान के इसी क्षेत्र के अन्तर्गत था।
- **'गुर्जर'** अथवा **'गुर्जरत्रा'** नाम से अभिहित क्षेत्र में **राजस्थान का दक्षिण-पश्चिमी भू-भाग** आता था जिसकी प्राचीन राजधानी **भीनमाल** (वर्तमान जालोर जिले में स्थित) थी, जैसा कि प्रसिद्ध चीनी यात्री **युवानच्वांग (ह्वेनसांग)** के यात्रा विवरण से संकेत मिलता है। आठवीं शताब्दी (778 ई.) में जालोर में **उद्योतन सूरि** द्वारा लिखित **'कुवलयमाला'** से भी गुर्जरदेस तथा **भिल्लमाल (भीनमाल/पीलोमोलो)** का उल्लेख हुआ है।
- **'मेदपाट'** मेवाड़ का ही पुराना नाम है। मेवाड़ के गुहिल राजवंश की स्थापना से पहले यहाँ कदाचित **'मेदों'** या **'मेरों'** का शासन था इसीलिए इसका प्राचीन नाम **मेदपाट** था। मेदपाट को ही **'प्राग्वाट'** भी कहा जाता था।
- **'माड'** नाम जैसलमेर एवं निकटवर्ती के लिए आज भी प्रचलित है, जिससे सम्बद्ध **'मांड'** राग राजस्थान में अतिशय लोकप्रिय है। अन्य क्षेत्रीय नामों से **'वल्लमंडल', 'दुँगल', 'अनन्तगोचर'** आदि भी उपलब्ध होते हैं।
- **नाडोल** (वर्तमान पाली जिले का गोडवाड़ क्षेत्र) के चौहानों का राज्य **'सप्तशत'** के नाम से जाना जाता था।
- **मारोठ** (नागौर-मारवाड़) भू-भाग पर किसी समय गौड़ों का राज्य रहा था जिसके फलस्वरूप यह प्रदेश **'गौड़ाटी'** (गौड़ावटी) कहलाया।
- खींची चौहानों द्वारा अधिकृत होने के कारण गागरोण व उसका समीपवर्ती क्षेत्र **खींचीवाड़ा,** झालाओं द्वारा शासित **झालावाड़,** राव शेखा कछवाहा एवं उसके वंशजों द्वारा अधिकृत प्रदेश **शेखावाटी,** तंवर क्षत्रियों के अधीन नीम का थाना तथा कोटपूतली का निकटवर्ती प्रदेश **तोरावाटी** (तंवरावाटी) कहलाया।
- मेव बाहुल्य अलवर एवं भरतपुर का कुछ प्रदेश **मेवात,** मेरों की बसावट के कारण अजमेर का निकटवर्ती इलाका **मेरवाड़ा** कहलाया।
- आदिवासी भीलों के बाहुल्य के कारण ही **भीलवाड़ा** ने अपना यह नाम पाया।

राजस्थान में रेडक्लिफ रेखा (भारत-पाक सीमा)

राजस्थान
अवस्थिति एवं विस्तार